दिनांक २ जुलाई २०१४ को पूर्वाह्न ११ बजे आर्यभट्ट सभागार, राँची में ''कार्तिक उराँव चेयर फॉर साईंस एण्ड टेक्नोलॉजी'' के तत्वाधान में राँची विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित सेमिनार के अवसर पर माननीय राज्यपाल महोदय का अभिभाषण

आज ''कार्तिक उराँव चेयर फॉर साईंस एण्ड टेक्नोलॉजी'' द्वारा **NanoScience and Nanotechnology** (नैनो विज्ञान एवं नैनो तकनीक) विषय पर सेमिनार का आयोजन किया जा रहा है। मुझे याद है कि 29 अक्टूबर 2012 को स्व० कार्तिक उराँव जी की जयंती के अवसर पर मैं उनके पैतृक गाँव लीटाटोली, गुमला गया था। मैंने वहाँ आयोजित कार्यक्रम में राँची विश्वविद्यालय को झारखंड के सपूत स्व० कार्तिक उराँव जी के नाम पर ''चेयर'' की स्थापना करने का निदेश दिया था। मुझे खुशी है कि राँची विश्वविद्यालय परिवार द्वारा इस काम को अमलीजामा पहना दिया गया है।

जनजाति समाज से आनेवाले स्व० कार्तिक उराँव जी हमेशा समाज व राष्ट्र की तरक्की की सोचते थे। मुझे यहाँ शायद बताने की जरूरत नहीं है कि वे एक महान शिक्षाविद्, कुशल अभियंता, दूरअंदेश (विज़नरी) नेता व समाज के प्रति समर्पित व्यक्ति थे, जिससे वे सभी के लिए प्रेरणास्त्रोत बने। गर्व की बात है कि स्व० कार्तिक उराँव जी हमारे झारखण्ड की इस मिट्टी से पैदा हुए।

एक इंजीनियर होने के कारण वे आर्थिक एवं सामाजिक विकास में शिक्षा के महत्त्व से भलीभांति परिचित थे। वैज्ञानिक तेवर के साथ एक सामाजिक कार्यकर्त्ता होने के कारण उन्होंने जीवनपर्यन्त सामाजिक बुराईयों तथा समाज में व्याप्त अन्य सामाजिक रूढ़िवादी परंपराओं को खत्म करने हेतु कार्य किया।

''कार्तिक उराँव चेयर फॉर साईंस एण्ड टेक्नोलॉजी'' द्वारा सेमिनार का विषय **NanoScience and Nanotechnology** (नैनो विज्ञान एवं नैनो तकनीक) रखा गया है। मैं मानता हूँ कि स्व० उराँव जो एक कुशल अभियंता थे एवं जो बाद में राजनीतिज्ञ भी बने, ने अपने काम व कौशल से देश ही नहीं विदेश में भी शोहरत हासिल की। उनके प्रति सच्ची अक़ीदत प्रकट करने हेतु राँची विश्वविद्यालय द्वारा उठाया गया यह कदम, उनके योगदान के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

पिछले कुछ दशकों से **Science and Technology** से संबंधित **research** के क्षेत्र में **NanoScience and Nanotechnology** (नैनो साईंस एवं नैनो टेक्नोलॉजी) ने अहमियत दर्ज कराई है। हमारे वैज्ञानिकगण इसके लिए बधाई के पात्र हैं। सभी को पहले के ट्रांजिस्टर/रेडियो की साइज याद होगी, आकार बड़े थे और अभी के साइज देखें। उसी प्रकार पिछले दिनों तीस साल पहले के कम्प्यूटर/टी.वी. बड़े आकर के होते थे। आज हम स्लीम कम्प्यूटर और एल.ई.डी. देखते हैं।

मोबाईल भी जब आये थे, तो शुरूआती दौर में बड़े आकार के होते थे, आप पॉकेट में नहीं रख सकते थे। लेकिन आज उसका साइज व वजन काफी कम हो गया है। आज के मोबाइल फोन में **Application** भी काफी ज्यादा है। आज टैबलेट या आई–पैड बहुत से लोगों के हाथ में देखते हैं जो कम्प्यूटर और मोबाइल

दोनों का काम करता है। ये सब **NanoScience and Nanotechnology** (नैनो साईंस एवं नैनो टेक्नोलॉजी) का ही कमाल है।

नैनो टेक्नोलॉजी के प्रयोग में आनेवाले घटक आकार एवं संरचना में बेहद कम (एक नैनोमीटर एक मीटर का एक सौ करोड़वाँ भाग) होने के कारण ही यह मुमकिन हो सका है। इससे तैयार विविध उपकरण बाजार में बड़ी संख्या में मौजूद हैं। ऐसी नई तकनीक एवं नये प्रोडक्ट्स को मानव जीवनशैली में अपनाने की आज होड़ सी लगी हुई है। मेडिकल साईंस, इलेक्ट्रोनिक्स, ऊर्जा एवं अंतरिक्ष खोज आदि जैसे महत्वपूर्ण आयामों में इस नैनो टेक्नोलॉजी का बहुत ही अहम योगदान है।

हमें इस विज्ञान एवं तकनीक का अधिक से अधिक लाभ मिलेगा, ऐसी मेरी उम्मीद है। साथ ही इस तकनीक का इस तरह से इस्तेमाल पर करने पर ध्यान देना होगा कि यह वातावरण को नुकसान न पहुँचायें। हमारे वैज्ञानिकों ने कई सफलतायें हासिल की हैं, मुल्क़ को उन पर फख़्र है। मुझे पूरी उम्मीद है कि आनेवाले दिनों में हम और सफलतायें हासिल करेंगे और पूरी दुनिया इस तकनीक से फायदा उठायेगी।

इस अवसर पर मैं खास तौर पर कहना चाहूँगा कि हमारे यूनिवर्सिटी में रिसर्च पर और बल दिया जाय। स्टूडेंट्स में नई **innovation** (इनोवेशन) और **invention** (इनवेन्शन) के प्रति ललक पैदा हो– इसके लिए माहौल बनाना होगा। इसके लिए कुलपति सहित सभी टीचर्स को ध्यान देना होगा। हमारे स्टूडेंट्स बहुत ही होनहार हैं, हमारे यहाँ से निकले कई छात्रों ने विभिन्न क्षेत्रों में कामयाबी हासिल की है। इसलिए विश्वविद्यालय परिवार उन्हें अपनी संतान समझकर पढ़ायें, यकीनन इससे हमारी यूनिवर्सिटी न केवल देश एक वरन् पूरी दुनिया के अच्छे विश्वविद्यालयों में शुमार किया जा सकेगा।

जय हिन्द! जय झारखण्ड!